सप्ततिका प्रकरण की विषयानुक्रमणिका

गाथा	विषय	पृष्ठ
१	प्रतिज्ञा गाथा	१
	'सिद्ध पद' के दो अर्थ और प्रसंगसे सप्ततिका प्रकरणकी रचना का आधार	२–३
	गाथामें आये हुए 'महार्थ' पदकी सार्थकता	३
	बन्ध, उदय, सत्ता और प्रकृतिस्थानका स्वरूपनिर्देश	३
	'श्रुणु' क्रिया पदकी सार्थकता	४
२	बन्ध, उदय और सत्त्व प्रकृतिस्थानोंके संवेध भगोंके कहनेकी प्रतिज्ञा	४
	प्रसंगसे मूल कर्मोंके बन्धस्थानोंका तथा उनके स्वामी और कालका निर्देश	५–८
	उक्त बन्धस्थानोंकी विशेषताओं का ज्ञापक कोष्ठक	९
	मूल कर्मोंके उदयस्थानोंका तथा उनके स्वामी और कालका निर्देश	९–१२
	उक्त उदयस्थानोंकी विशेषताओंका ज्ञापक कोष्ठक	१२
	मूल कर्मोंके सत्त्वस्थानोंका तथा उनके स्वामी और कालका निर्देश	१२–१४

गाथा	विषय	पृष्ठ
	उक्त सत्त्वस्थानोंकी विशेषताओंका ज्ञापक कोष्ठक	१४
३	मूल कर्मोंके बन्ध, उदय और सत्त्वस्थानोंके संवेधका निर्देश	१४–१७
	उक्त विशेषताओंका ज्ञापक कोष्ठक	१८
४	मूल कर्मोंके जीवस्थानोंमें संवेध भंग	१८–२१
	उक्त विशेषताओंका ज्ञापक कोष्ठक	२१
५	मूल कर्मोंके गुणस्थानोंमें संवेध भंग	२२–२४
	उक्त विशेषताका ज्ञापक कोष्ठक	२५
६	ज्ञानावरण और अन्तराय कर्मके सवेध भंग	२५–२७
	—कोष्ठक	२७
	ज्ञानावरण और अन्तराय कर्मोंके सवेध भंगोंका काल	२७–२८
७	दर्शनावरण कर्मके बन्ध, उदय और सत्त्वस्थान	२८–३२
८-९	दर्शनावरण कर्मके संवेध भग	३२–३५
	—कोष्ठक	३६
	दर्शनावरण कर्मके संवेध भंगोंके विषयमें मतभेदकी चर्चा	३६–३९
९	वेदनीय, आयु और गोत्र कर्मके संवेध भंगोंकी प्रतिज्ञा	३९
	वेदनीय कर्मके संवेध भंग	४०–४१

गाथा	विषय	पृष्ठ
	—कोष्ठक	४२
	नरकगतिमें आयुकर्मके सवेध भंग	४२–४५
	—कोष्ठक	५४
	देवगतिमें आयुकर्म सवेध भंग	४५
	—कोष्ठक	४६
	तिर्यंच गतिमें आयु कर्मके सवेधभंग	४६–४७
	—कोष्ठक	४८
	मनुष्यगतिमें आयुकर्मके सवेध भग	४८–५१
	—कोष्ठक	५२
	प्रत्येकगतिमें आयुकर्मके भग लानेका नियम	५२–५३
	गोत्र कर्मके सवेध भग	५३–५६
	—कोष्ठक	५६
१०	मोहनीयके वन्धस्थान, और उनका काल	५७–६१
	—कोष्ठक	६१
११	मोहनीयके उदयस्थान और उनका काल	६२–६४
	प्रसगसे आनुपूर्वियोंका स्वरूपनिर्देश	६२
	—कोष्ठक	६४
१२-१३	मोहनीयके सत्त्वस्थान, स्वामी और काल	६५–७४
	—कोष्ठक	७५
१४	मोहनीयके वन्धस्थानोंके भंग	७६–७८

गाथा	विषय	पृष्ठ
१५-१७	बन्धस्थानोंमें उदयस्थानोंका निर्देश	७८–९४
	मिश्रदृष्टि गुणस्थानमें अनन्तानुबन्धीके उदयसे रहित उदयस्थान कैसे सम्भव है इसका निर्देश	८०–८१
	श्रेणिगत और अश्रेणिगत सास्वादनसम्यग्दृष्टिका विशेष खुलासा	८३–८४
	अनन्तानुबन्धीका उदय हुए विना सास्वादन गुण-स्थान नहीं होता इसका निर्देश	८५–८६
	दो प्रकृतिक उदयस्थानमें भंगोंके मतभेदकी चर्चा	९२
१८	मोहनीय कर्मके उदयस्थानोंके भंग	९४–९७
१९	उदयस्थानोंके कुल भंगोंकी संख्या	९८
	बन्धस्थान व उदयस्थानोंके सवेध भंगोंका कोष्ठक	९९
१९	पदसंख्या	१००–१०१
	—कोष्ठक	१०१
२०	उदयस्थान व पदसंख्या	१०२
	उदयस्थानोंका काल	१०३–१०६
२१-२२	सत्तास्थानोंके साथ बंधस्थानोंकासंवेधनिरूपण	१०७-१२१
	मोहनीयके बन्ध, उदय और सत्तास्थानोंके भंगोंका ज्ञापक कोष्ठक	१२२
२३	मोहनीयके बन्धादि स्थानों का निर्देश करनेवाली उपसंहार गाथा	१२३

गाथा	विषय	पृष्ठ
२४	नामकर्मके बन्धस्थान	१२४
	नामकर्मके बन्धस्थानोंके स्वामी और उनके भंगोंका निर्देश	१२४–१३५
२५	नामकर्मके प्रत्येक बन्धस्थानके भंग	१३५–१३७
	—कोष्ठक	१३८
२६	नामकर्मके उदयस्थान	१३९
	नामकर्मके उदयस्थानोंके स्वामी और उनके भंगोंका निर्देश	१३९–१५६
२७-२८	नामकर्मके प्रत्येक उदयस्थानके कुल भंग	१५६–१५९
	—कोष्ठक	१५९
२९	नामकर्मके सत्त्वस्थान	१६०–१६२
३०	नामकर्मके बन्धादिस्थानोंके सवेध कथनकी प्रतिज्ञा	१६२–१६३
३१-३२	ओघसे संवेधविचार	१६३–१७८
	नामकर्मके बन्धादिस्थान व उनके भंगोंका कोष्ठक	१७९–१८१
३३	जीवस्थानों और गुणस्थानोंमें उत्तर प्रकृतियों-के बन्धादि स्थानोंके भंगोंके विचारकी प्रतिज्ञा	१८१–१८२
३४	जीवस्थानोंमें ज्ञानावरण और अन्तरायके	

गाथा	विषय	पृष्ठ
	बन्धादिस्थानोंके संवेध भंगोंका विचार	१८२--१८४
३५	जीवस्थानोंमें दर्शनावरणके बन्धादिस्थानोंके सवेध भंगोंका विचार	१८४--१८५
	जीवस्थानोंमें वेदनीय, आयु और गोत्रके बन्धादिस्थानोंके सवेधभंगोंका विचार	१८५
	जीवस्थानोंमें ६ कर्मोंके भंगोंका का ज्ञापक कोष्ठक	१८९
३६	जीवस्थानोंमें मोहनीयके बन्धादि स्थानोंके सवेधभगोंका विचार	१९०--१९३
	जीवस्थानोंमें मोहनीयके बन्धादिस्थानोंके संवेधभगोंका कोष्ठक	१९४
३७-३८	जीवस्थानोंमें नामकर्मके बन्धादिस्थानोंके भंगोंका निर्देश	१९५--२१३
	जीवस्थानोंमें बन्धस्थान और उनके भगोंका कोष्ठक	२१४--२१५
	जीवस्थानोंमें उदयस्थान और उनके भंगोंका कोष्ठक	२१६--२१७
	जीवस्थानोंमें बन्धादिस्थान और उनके भंगोंका कोष्ठक	२१८

गाथा	विषय	पृष्ठ
३९ पूर्वा०	गुणस्थानोंमें ज्ञानावरण और अन्तरायके बन्धादिस्थानों के भंगोंका विचार	२१९
३९-४१	गुणस्थानोंमें दर्शनावरणके बन्धादिस्थानोंके भंगोंका विचार	२२०–२२३
४१ उत्त०	गुणस्थानोंमें वेदनीय, आयु और गोत्रके बन्धादिस्थानोंके भंगोंके विचारकी सूचना	२२३–२२९
	गुणस्थानोंमें ६ कर्मों के बन्धादिस्थानोंके भंगोंका कोष्ठक	२३०
४२	गुणस्थानोंमें मोहनीयके बन्धस्थानोंका विचार	२३१
४३-४५	गुणस्थानोंमें मोहनीयके उदयस्थान व भंग विचार	२३१–२३५
४६	गुणस्थानोंकी अपेक्षा उदयस्थानोंके भंग	२३५–२३६
	" उदयविकल्पोंका कोष्ठक	२३७
	" पदवृन्दोंका "	२३८
४७	योग, उपयोग और लेश्याओंमें संवेधभंगोंकी सूचना	१३९
	योगोंकी अपेक्षा उदयविकल्पोंका विचार	२४०–२४३
	योगोंकी अपेक्षा उदयविकल्पोंका कोष्ठक	२४४
	योगोंकी अपेक्षा पदवृन्दोंका विचार	२४५–२४८
	योगोंकी अपेक्षा पदवृन्दोंका कोष्ठक	२४९

गाथा	विषय	पृष्ठ
	योगोंकी अपेक्षा उदयस्थानोंका विचार	२५०--२५१
	उपयोगोंकी अपेक्षा उदयस्थानोंका कोष्ठक	२५२
	उपयोगोंकी अपेक्षा पदवृन्दोंका विचार	२५३
	उपयोगोंकी अपेक्षा पदवृन्दोंका कोष्ठक	२५४
	लेश्याओंकी अपेक्षा उदयस्थानोंका विचार	२५५
	लेश्याओंकी अपेक्षा उदयस्थानोंका कोष्ठक	२५६
	" पदवृन्दोंका विचार	२५७
	" " कोष्ठक	२५८
४८	गुणस्थानोंमें मोहनीयके सत्त्वस्थान	२५९--२६०
	गुणस्थानोंमें मोहनीयके बन्धादिस्थानोंके संवेधभंगोंका विचार	२६०--२६२
४९-५०	गुणस्थानोंमें नामकर्मके बन्धादिस्थानोंका विचार	२६२
	मिथ्यात्वमें नामकर्मके बन्धादिस्थान व संवेधभंग	२६३--२७०
	मिथ्यात्वमें नामकर्मके संवेधभंगोंका कोष्ठक	२७१--२७२
	सास्वादनमें नामकर्मके बन्धादिस्थान व संवेध भंग	२७३--२७७
	सास्वादनमें नामकर्मके संवेधभंगोंका कोष्ठक	२७८

गाथा	विषय	पृष्ठ
	मिश्रमें नामकर्मके बन्धादिस्थान व संवेधभंग	२७९–२८०
	,, ,, कोष्ठक	२८०
	अविरतमें नामकर्मके बन्धादिस्थान व संवेधभंग	२८१–२८४
	,, ,, ,, कोष्ठक	२८५
	देशविरतमें नामकर्मके बन्धादिस्थान व संवेधभंग	२८६–२८७
	,, ,, ,, कोष्ठक	२८७
	प्रमत्तमें नामकर्मके बन्धादिस्थान व संवेधभंग	२८८–२८९
	,, ,, ,, कोष्ठक	२८९
	अप्रमत्तमें ,, ,, व संवेधभंग	२९०–२९१
	,, ,, ,, कोष्ठक	२९१
	अपूर्वकरणमें ,, ,, व संवेधभंग	२९२–२९३
	,, ,, ,, कोष्ठक	२९३
	अनिवृत्ति आदिमें ,, व संवेधभंग	२९४–२९५
	सयोगकेवलीके उदय व सत्तास्थानोंके संवेधका कोष्ठक	२९६
	अयोगीके उदय व सत्तास्थानोंके संवेधका विचार	२९६–२९७

गाथा	विषय	पृष्ठ
	" " " कोष्ठक	२९७
५१	गति मार्गणामें नामकर्मके बन्धादिस्थानोंका विचार	२९७–२९९
	नरकगतिमें संवेध विचार	२९९–३०१
	" " —का कोष्ठक	३०१
	तिर्यंचगतिमें संवेध विचार	३०१–३०२
	" " —का कोष्ठक	३०२–३०४
	मनुष्यगतिमे संवेधविचार	३०५–३०६
	" " —का कोष्ठक	३०७३०८
	देवगतिमें संवेध विचार	३०९
	" " —का कोष्ठक	३०९–३१०
५२	इन्द्रिय मार्गणामें नामकर्मके बन्धादिस्थान	३१०–३११
	एकेन्द्रियमार्गणामें संवेध विचार	३११
	" " —का कोष्ठक	३१२
	विकलत्रयोंमें सवेध विचार	३१३
	" " —का कोष्ठक	३१३–३१४
	पंचेन्द्रियोंमें सवेध विचार	३१५–३१६
	" " —का कोष्ठक	३१७–३१८
५३	बन्धादिस्थानोंके आठ अनुयोगद्वारोंमें कथन करनेकी सूचना	३१९–३२२

गाथा	विषय	पृ०
५४	उदयसे उदीरणामें विशेषताका निर्देश	३२२–३२४
५५	जिन ४१ प्रकृतियोंमें विशेषता है उनका निर्देश	३२४–३२६
५६-५९	गुणस्थानोंमें बन्धप्रकृतियोंका निर्देश	३२६–३३३
	" " कोष्ठक	३३३–३३४
६०	मार्गणाओंमें बन्धस्वामित्वके जाननेकी सूचना	३३५
६१	किस गतिमें कितनी प्रकृत्तियोंकी सत्ता होती है इसका विचार	३३६
६२	उपशमश्रेणि विचार	३३७–३५९
	अनन्तानुबन्धी चतुष्ककी उपशमविधि	३३७–३४५
	" " विसयोजनाविधि	३४५–३४६
	दर्शमोहनीयकी उपशमनाविधि	३४६–३४९
	चारित्रमोहनीयकी "	३४९–३५८
	उपशमश्रेणिसे च्युत होकर जीव किस किस गुणस्थानको प्राप्त होता है इसका विचार	३५८–३५९
	एक भवमें कितनी बार उपश्रमश्रेणि पर चढता है इसका निर्देश	२५९

गाथा	विषय	पृष्ठ
६३-६४	क्षपकश्रेणी विचार	३५९-३७५
	क्षायिकसम्यक्त्व की प्राप्ति का निर्देश	३५९-३६४
	क्षपक श्रेणिमें क्षयको प्राप्त होनेवाली प्रकृतियों का व अन्य कार्यों का निर्देश	३६४-३७२
	केवलिसमुद्घात का कारण	३७२
	सात समुद्घातों का स्वरूप	३७३
	योग निरोध क्रिया का क्रम	३७३-३७४
	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्यान का कार्य विशेष	३७४
	सयोगी के अन्तिम समय में जिन प्रकृतियों का सत्त्वविच्छेद होता है उनका निर्देश	३७४
	अयोगी गुणस्थान के कार्य विशेष	३७४-३७५
६५	अयोगी के उपान्त्य समय में क्षय को प्राप्त होनेवाली प्रकृतियों का निर्देश	३७५-३७६
६६	अयोगी के उदय को प्राप्त प्रकृतियों का निर्देश	३७६-३७७
६७	अयोगी के उदयप्राप्त नामकर्म की नौ प्रकृतियाँ	३७७
६८	मनुष्यानुपूर्वी की सत्ता कहाँ तक है इस विषय में मतभेद का निर्देश	३७७-३७८

गाथा	विषय	पृ०
६९	अन्य आचार्य अयोगी के अन्तिम समय में मनुष्यानुपूर्वीका सत्त्व क्यों मानते है इसका निर्देश	३६९-३७०
७०	कर्मनाश होने के बाद जीव सिद्धिसुखका अनुभव करता है इस बात का निर्देश	३८०-३८३
७१	उपसहार गाथा	३८३-३८४
७२	लघुता	३८४